अध्याय -1

प्रस्तावना:-

भारत में दलित शब्द एक वैचार्किय है जो सामूहिकता, नेतृत्ववाले विचार का कई दशकों तक परिवर्तित रूप हैं जिसका सम्बन्ध संघर्षो के सम्मान से जुड़ा हैं।दलित शब्द आज इक्कीसवीं शताब्दी में सामाजिक और राजनीतिक रूप से बहुत चर्चा में है। दलित कोई नया शब्द नहीं है जैसे 1947 में डॉ .बाबा साहेब अम्बेडकर भी "द अनटचेबुल्स" में दलित का प्रयोग करते है अश्पृश्यों के लिए अंग्रेजी के अनुवाद में यह शब्द मिलता किन्तु व्याख्या नहीं,1970 में दलित पैंथरों ने इस शब्द को अपने घोषणा पत्र में अनुसूचित जातियों नव बौद्धों, कामगारों लोगों भूमिहीनों एवं गरीब कृषक, इस प्रकार से सारगर्भित शोध की दृष्टि से देखा जाये तो वैश्विक भारत में सभी सामाजिक विचारों का षड्यंत्र और कुटनीतिक रूप से भारत में एक समय जाति व्यवस्था की बनाई हुई चातुष्वर्ण विधान पर टिकी हुई हैं।चार वर्णों (ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) पर आधारित समाज की संरचना को चर्तुवर्ण विधान या वर्ण व्यवस्था कहते हैं।इसी चार वर्णों में सबसे निचले स्थान पर शूद्र शब्द से संबोधित किया जाता हैं।पर इस शब्द को महात्मा ज्योतिबा फुले ने अपनी पुस्तक गुलामगिरी में शूद्र को बनने का घोर अनर्थ अविद्या के कारण बताते है उन्होंने शिक्षा की उपयोगिता पर एक सारगर्भित उद्धरण लिखा हैं।

'विद्या बिन मति गई,

' मति बिन गति गई,

'गति बिन नीति गई,

'नीति बिन वित्त गई,

‘वित्त बिन शूद्र हुये,

‘इतने अनर्थ अविद्दा के कारण हुये,

इस प्रकार महात्मा ज्योतिबा फुले ने अश्पृश्य समाज को सामाजिक गुलामी से मुक्त करने के लिए समाज सुधारने के लिए अनेक सामाजिक कुरीतियों की जड़ को साक्षात करते हुए सत्य शोधक समाज की स्थापना किया।जो ब्राह्मणवाद का भेद खोला जो मुख्य रूप से भारत में सनातनी ब्राह्मण समुदाय द्वारा मनुस्मृति धर्म ग्रंथो से मानव शूद्र अस्पृश्य जातियों को ब्राह्मणों द्वारा जाति उच्च-नीच का कुरीतियों का सामना करना पड़ता था। उन्होंने पूना में सर्वप्रथम बालिका विद्यालय की स्थापना सन 1848 में किया और सावित्री बाई फुले ने भारत की प्रथम अध्यापिका का गौरव प्राप्त किया।आधुनिक भारत की नवजागरण और महान परिवर्तनवादी महिला के रूप में जाना जाता है जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी में छुआछुत, बाल विवाह, सतीप्रथा का पुरजोर विरोध किया। जो समाज में महिलाओं के लिए और ब्राह्मणवादियों के लिए नए तरह से सोचने की मानवतावादी चेतना को जगाया और राष्ट्रपिता ज्योतिबा फुले और राष्ट्रमाता सावित्री बाई फुले का जीवन समाज सेवा में लगा दिया और सम्पूर्ण जीवन प्रतिरोध की शिक्षा से समाज में परिवर्तन के चुनौती लिए प्रयास जारी रखा से भरा रहा।

संत सिरोमणि रविदास के अनुसार दलित समाज को (क्रांतिपथ का पथिक-ले.पृथ्वीसिंह आजाद पृष्ठ 290) सामाजिक व्यवस्था में ब्राह्मण वर्ग मनमाने तरीके से उपयोगी बनाता रहा हैं।इसका कारण यह रहा कि प्रशासन की दण्ड संहिता उस पर लागू नहीं होती थी।वेद, रामायण, गीता, महाभारत, पुराण, उपनिषद, मनुस्मृति मनमाने तरीके से ब्राह्मण राजाओं के संरक्षण में लिखे गये।उनके अंधविश्वासों को मूलनिवासियों ने मानने से इन्कार कर दिया था।जैसे गाय को काट करके न खाना, सती के नाम पर अपनी बहू बेटी को न जलाना , बेटी पति के मरने पर पत्नी के सिर के बाल न मुंडवाना आदि।इसलिए ब्राह्मणों ने उन मूल निवासियों से जीने का अधिकार ही छीन लिया, क्योंकि राजसता उनके पास थी।उनके पढ़ने

लिखने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।यज्ञोपवीत का एक ऐसा धिनौना अविष्कार किया कि उसने समाज को दो भागों में बाँट दिया।राज कर्मचारी यज्ञोपवीत देखकर उसके दण्ड का निर्धारण करते थे।प्रारम्भ में ब्राहमण यहां के निवासियों को जजमान कहकर पुकारते थे, क्योंकि आर्य कन्या सती पार्वती का आदिवासी कबीले के नेता शंकर से विवाह हुआ था इसलिए सभी ब्राह्मण यहाँ के आदिवासियों को जजमान कहकर पुकारते थे ब्राह्मणों ने अपने वेदों, गीता, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथो तथा मूर्तियों एवं राजसत्ता के माध्यम से समाज में अन्धविश्वास की जो गंदगी फेंकी या फ़ेंक रहे है, उस गंदगी को समय-समय पर समाज सुधारकों ने साफ करने का प्रयत्न किया।उसमें मुख्य बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर, ज्योतिबा फुले, रामास्वामी नायकर, बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर के नाम प्रमुख हैं।और इन सभी महान विभूतियों के संघर्षों का इतिहास इक्कीसवीं शताब्दी में कांशीराम और मायावती को जन्म दिया जो आज राजनीतिक सत्ता के द्वारा दलित समाज की उत्थान में बहनजी उत्तरप्रदेश में दलित समाज को एक नया दिशा और दशा दिया।भारतीय राजनीति में दलित नेता का आज वर्तमान समय में वे राजनीतिक परम्पराओं या विचाधारात्मक सिध्दांतों की प्रवाह बिलकुल नहीं करती इस विशेषता के कारण मायावती अपने उन समर्पित राजनेताओं की तुलना में बेहतर स्थिति में हैं जो दलित स्त्रियों के और उत्तरप्रदेश के शासन सत्ता में कानूनी सक्रियता पूर्ण रूप से संवैधानिक उपचारों के माध्यम से सम्पूर्ण बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के रास्ते पर चलकर एक उच्च पद पर दलित स्त्री यह साबित कर दिया कि दलित बुध्दिजीवी विचारक देश के जन-जन के उत्थान और कल्याण के लिए समर्पित रहता हैं।

कांशीराम और मायावती राजनैतिक दृष्टि से एक दूसरे के आदर्श पूरक थे।दृढ़ संकल्प के साथ देश भर में घूम-घूम कर, अकेले व्यक्तियों और लोगों के छोटे-छोटे समूहों से मिल कर वे अपने आन्दोलन में उन्हीं भर्ती करने के लिए आकर्षित करते थे।मायावती के पास सीधे जनता को सम्बोधित करने का हुनर था, खासकर उत्तरप्रदेश के चमारों ने तो उन्हें अपनी बहनजी के रूप में स्वीकार कर लिया था।कांशीराम ने

बहुत होशियारी से अन्य राजनीतिज्ञों और दलों को गुप-चुप किये गये सौदों के लिए साधा जिससे बसपा को सबसे ऊपर तक की कठिन चढ़ाई चढाने में सहायता मिली।जब इन सौदों की उपयोगिता ख़त्म हो जाती थी तो मायावती बड़ी रुखाई और मुस्तैदी से इन्हें भंग कर देती थी, ताकि पार्टी आगे बढ़ती रहे।कांशीराम अपने लक्ष्य में नये दल बदलने वालों के जुलूस को शामिल करने के लिए राजनैतिक पार्टियों को फुसलाते थे ताकि उनके समर्थन से उन्हें तात्कालिक लाभ मिल जाये जबकि वे लम्बे समय तक उनकी निष्ठा के संदिग्ध होने के बारे में जानते थे।और मायावती संरक्षिका देवी की तरह, जरुरत पड़ने पर डरा-धमाका कर यह निश्चित करती थी कि कोई और पार्टी उन्हें, उनके पांव तले से खिसका न ले जाये ।

कांशीराम हमेशा बड़े स्वप्न देखते थे और देश भर में आन्दोलन फैलाने की तरकीबों के बारे में लगातार सोचते थे।बसपा को एक राष्ट्रीय दल बनाने के मोह के कारण उन्होंने आग्रह किया कि अपने सम्पूर्ण भारतीय कोष में महत्वपूर्ण मत जोड़ने के लिए पार्टी को देश के हर कोने में चुनाव लड़ना चाहिए ताकि चुनाव आयोग उसे आवश्यक मान्यता दे सके।उनका दिमाग सामग्री का ऐसा खता था जिसमें तरह-तरह के दलों के दशकों के चुनावी प्रदर्शन के आंकड़े दर्ज थे और किसी भी बहस के समय अपनी बात पुष्ट करने के लिए वह इस सामग्री को पेश कर देते थे।सीधी-सीधी व्याख्या या एकतरफा दृष्टिकोण से सन्तुष्ट न होते हुए, कांशीराम तब तक असंतुष्ट रहते थे जब तक किसी भी समस्या या चेतावनी का हल निकालने के लिए हर तरह के समाधान का प्रयोग नहीं कर लेते थे ।

दूसरी ओर मायावती एक खास निशाने पर साधने के लिए बनाई गयी मिसाइल सरीखी थी।उसका काम था देश के सबसे बड़े राज्य के लिए दलितों की वोट इकट्ठा करना और यह काम वह अपने चुनाव क्षेत्र में अकेली ही कर लेती थी।चाहे शुरुआत के दिनों में एक राजनैतिक नौसिखिये की तरह एक साइकिल पर सवार हो कर या आज उन्हें विदेशी हेलिकॉप्टर में इधर-उधर ले जाया जा रहा हो, मायावती ने हमेशा

अपनी उर्जा एक ही दिशा में लगायी और अपने आप को कभी मूल लक्ष्य से हटने नहीं दिया।वह सीधी दिशा में सोचते हुए एक मसले से दूसरे तक पहुँचने के लिए सबसे छोटा रास्ता अपनाती है एक प्रेक्षक ने कहा।

जिस एकचित जोश के साथ मायावती ने उत्तरप्रदेश में जीत हासिल करने की हिम्मत तोड़ने वाली चुनौती को अपनाया था कांशीराम को उनकी यह बात अनुकूल पड़ी थी।इस बात के संकेत मिले हैं कि मायावती ने उन्हें चेतावनी दी थी कि वे उनके क्षेत्र में दखल न दें और उन्हें राज्य से दूर रहना पड़ा।परन्तु सच बात तो यह है कांशीराम इतने बड़े राज्य को सँभालने के बारे में घबरा रहे थे क्योंकि यहाँ उनकी जड़े नहीं थी और वे यही चाहते थे कि उसे किसी ऐसे व्यक्ति को सौंप दें जो ज्यादा अनुकूल हो।सच बात तो यह है कि उत्तरप्रदेश के नेतृत्व के खालीपन को भरने की नीयत से उन्होंने मायावती को चुना क्योंकि उनके द्वारा चुने गये कोई भी दलित और पिछड़ी जातियों के नेता इसके लिए ठीक नहीं लग रहे थे।कुछ वर्षों बाद अपने इस चुनाव के बारे में पार्टी के ज्यादा वरिष्ठ सदस्यों की नाराजगी को याद करते हुए कांशीराम का कहना है, उनके वरिष्ठ जन बहुत बहुत नाराज हो गये... और कुमारी मायावती को मौका देने पर मुझ पर दबाव डालने लगे।यहाँ तक कि उनमें से ज्यादातर तो आन्दोलन छोड़ कर चले गये।मै नहीं जानता कि वे सब आज कहाँ हैं।जबकि मायावती आन्दोलन के साथ-साथ उन्नति करती चली गयी।इस काम में उनके इतने उत्साहपूर्वक लीन हो जाने से, राज्य में न केवल कांशीराम के आन्दोलन को बढ़ावा मिला, बल्कि उन्हें इतना ज्यादा समय मिल गया कि देश के अलग-अलग हिस्सों में, जहाँ भी सम्भावना थी, वे बुर्जों का निर्माण कर सके।

बहन जी और साहब की इस जोड़ी ने जिस नाम से वे एक-दूसरे को पुकारते थे, अपनी-अपनी निजी ताकत और कौशल को आपस में मिला कर एक घातक सम्मिश्रण तैयार किया जिसके जरिये धीरे-धीरे एक ऐसे राजनैतिक भवन का निर्माण हुआ हो कुछ समय बाद उत्तरप्रदेश को हिला कर रख दे और

पुरे देश में उद्वेलन पैदा कर दे।दोनों में कभी-कभी राजनैतिक मतभेद होते थे, लेकिन मूल रूप से कांशीराम और मायावती एक अनूठे तालमेल के साथ काम करते थे।उनके संयुक्त साहसिक कार्यों की देखने लायक सफलता पत्रकारों द्वारा उनके बीच घनिष्ठ मतभेद के बारे में बार-बार लगाये जाने वाले अनुमान को झुठलाती है।अगर लड़ाई-झगड़े से उनकी राजनैतिक साझेदारी दूषित या कमजोर होती, जैसा कि कुछ व्याख्याकारों ने सुझाया है, तो वह न तो इतनी फलदायक साबित हो पाती और न ही बसपा बार-बार चुनावी सफलता हासील कर पाती।

एक युवा दलित स्कूल टीचर पर, जिसे राजनीति का जरा भी अनुभव नहीं था, कांशीराम ने इतना भरोसा करके और अपने सहयोगियों के विरोध के खिलाफ सहयोग दे कर बहुत बड़ा जुआ खेला था।उस समय हमें यह लग रहा था कि अपने राजनैतिक निर्णय के खिलाफ जा कर वे मायावती के प्रति अपनी भावनाओं के वेग में बह गये थे उनके एक पुराने सहयोगी ने ऐसा कहते हुए साथ में यह भी जोड़ा, उसने हमको गलत साबित कर दिया।अगर नतीजा कुछ और निकलता, तो एक युवा महिला के लिए अपने आन्दोलन को न्योछावर करने के कलंक का सामना उन्हें लगातार करना पड़ता।मायावती में उनकी निष्ठा की प्रत्यक्ष पुष्टि ने इस दलित मसीहा को उनकी जिंदगी के आखिर में असीम तृप्ति प्रदान की होगी।

उनके इस सम्बन्ध का आखिरी प्रतिक, जो केवल इस देश के राजनैतिक इतिहास में ही नहीं, बल्कि पूरे संसार में अतुल्य है, लखनऊ में बहुजन समाज प्रेरणा केन्द्र के उस 102 फुट ऊँचे स्तूप की शक्ल की अन्दर की गुफा में देखने को मिलता है।वहां एक-एक दर्जन फुट ऊँचे, एकदम जीवित लगनेवाले कांशीराम और मायावती के बुत, बाबा साहेब अम्बेडकर के बुत की छत्रछाया में एक-दूसरे के निकट खड़े हैं।कांशीराम ने हमेशा की तरह बुशर्ट और पैंट पहनी है और मायवती के बाल छोटे-छोटे कटे हैं, गर्दन के गिर्द दुपट्टा लिपटा है और उन्होंने हैंडबैग पकड़ा हुआ हैं।और दीवार पर लगे गहरे नीले रावटी पत्थर में कांशीराम की आखिरी वसीयत खुदी हुई है।उनके शब्द है : मेरी मृत्यु के बाद मेरी अस्थियाँ गंगा या यमुना

में विसर्जित न की जायें , मैं चाहता हूँ उन्हें प्रेरणा केन्द्र में रखा जायें।मैं आशा करता हूँ कि उसके माता-पिता, भाई-बहन, सभी रिश्तेदार और बसपा के सदस्य मेरी इच्छा जरुर पूरी करेंगे।यह सदा समाज की मनुवादी शैली के विरोध का प्रतिक रहेगा और बहुजन समाज को इस स्मारक के सम्मान और इसके प्रति आस्था के लिए प्रेरित करेगा।

बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम साहब ऐतिहासिक भाषण और जीवन दर्शन के संकलन भारत वाघमारे प्रकाशक प्रबुध्द भारत पुस्तकालय आणि प्रकाशन व्यवसाय नागपुर (प्रकाशन तिथि: 19 सितम्बर 2013 पृष्ठ न. 114) जाति के निर्माण के पीछे एक विशेष उद्देश्य है जो प्रथम अन्तराष्ट्रीय "दलित अधिवेशन" मलेशिया।

जाति का निर्माण बिना किसी उद्देश्य के नहीं किया गया।इसके पीछे एक गहरा उद्देश्य और स्वार्थ छिपा हुआ है।जब तक यह उद्देश्य अथवा स्वार्थ जिन्दा रहता है जाति का विनाश नहीं किया जा सकता।आप ब्राह्मणों अथवा सवर्ण जातियों को इस प्रकार जाति विहीन समाज की पुनर्स्थापना के लिए कन्वेंशन, सम्मेलन, विचार-गोष्टी आदि आयोजित करते हुये नहीं देखेंगे।ऐसा इसलिए है क्योंकि जाति का निर्माण इन्ही वर्गों द्वारा अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति के लिए किया गया है।जाति के निर्माण के कारण केवल मुट्ठीभर सवर्ण जातियों को ही फायदा हुआ है और 85 प्रतिशत बहुजन समाज को पिछले हजारों वर्षों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी नुकसान होता रहा है और वे अपमान और शोषण का शिकार बनते रहे हैं।अगर जाति के निर्माण से सवर्ण वर्गों को ही फायदा रहा है तो भला वे इसके विनाश के लिए पहल क्यों करेंगे ? इस तरह के की कान्फ्रेंस, सम्मेलन केवल हम लोग ही आयोजित कर सकते हैं, क्योंकि हम जाति व्यवस्था के शिकार हैं।इसका फायदा पाने वालों की जाति के विनाश में कोई रूचि नहीं हो सकती, बल्कि वे तो जाति व्यवस्था को और अधिक मजबूत देखना चाहते हैं, ताकि जाति के आधार पर उन्हें मिलने वाली सभी सुविधायें भविष्य में जारी रहें।इस सभागृह में जो लोग बैठे हैं, उनमें से अधिकांश शायद आज स्वयं परोक्ष

रूप से जाति के शिकार न हों।लेकिन हम सभी को जन्म ऐसे लोगों अथवा समाज के बीच हुआ जोकि जाति के शिकार हैं इसलिए हमें जाति के विनाश की दिशा में सोचने की जरुरत है।

हमारे अन्दर जातिविहीन समाज का निर्माण करने की भावना हो सकती है, लेकिन इसके साथ भी सत्य है, कि अभी निकट भविष्य में जाति के विनाश की भावना लगभग न के बराबर है।जो जब तक जाति का पूरी तरह विनाश न हो जाये तब तक हमें क्या करना चाहिए ? मेरा मानना है, कि जब तक हम एक जाति विहीन समाज की स्थापना करने में सफल नहीं हो जाते, तब तक जाति का उपयोग करना होगा।अगर ब्राहमण जाति का उपयोग अपने फायदे के लिए कर सकते हैं तो मैं उसका इस्तेमाल अपने समाज के हित में क्यों नहीं कर सकता ?

जो दलित समाज के लिए बनाये गये षण्यंत्र में शूद्रों को केवल समाज विभाजन के सबसे निचले स्तर पर रखा गया है बल्कि उन पर अनगिनत कलंक लाद दिए गये. ताकि उन्हें कठोर नियमों द्वारा बांधकर उनकी तरक्की को रोका जाये. मनुस्मृति का विधान था कि :-“

1- न शूद्राय मतिं दद्यात- शूद्रों को शिक्षा नहीं देना चाहिए . मनु- 4-80
2- शक्तेनापि हि शिद्रेण न कार्यो धन संचय – सक्षम होने पर भी शूद्र धन का संचय न करें. मनु-10-129
3- वंसासी मृत चेलानि- शूद्र मर्दों पर का उतरन पहने- मनु-10-52
4- भिन्न भंदेशु भोजनम- शूद्र टूटे फूटे वर्तन में भोजन करें- मनु- 10-52
5- उच्छिष्टमन्नं दातान्य- शूद्र जूठा भोजन करें. मनु- 11-125
6- काष्णाय शूद्र महिलायें लोहे का गहना पहने. मनु- 10-52
7- परिव्रज्या च नित्यशः- वह एक स्थान पर स्थिर न रहे, हमेशा घूमता फिरता रहे.-मनु-10-52

8- चण्डाल च श्वपचानां वर्हिग्रामत प्रतिश्रय- अछूत गाँव के बाहर बसे।मनु-10-51"[1]

मनु के उपरोक्त विधान के कारण शुद्रातिशूद्र वर्ग(sc,st,obc) पशुवत जीवन जीने को मजबूर हुये.इतना ही नहीं, इन निर्योग्यताओं को कानूनी और दण्ड विषयक प्रावधान से जोड़ा गया ताकि उस व्यक्ति को दण्डित किया जा सके जो इस नियम की अवहेलना करता है, यथायो लोभादधमो जात्या जीवोदुत्कृष्टकर्मभि: . तंराजा निधनं कत्वा क्षिप्रमेय प्रवासयेता . मनु-10-96 अर्थात जो अधम जाति(शुद्रातिशुद्र वर्ग)लोभ वश उत्तम आजीविका से जीवन निर्वाह करता हो उसको राजा निर्धन करके ही देश निकाल दे. "निर्योग्ताओं के उल्लघन के विरुद्ध मनु का यह दण्ड विधान मूलनिवासी दलित बहुजन समाज को घोर आर्थिक विपन्नता और चरम दरिद्रता की स्थिति में ला पटका. यही से अस्पृश्यता की शुरुआत होती है. वर्तमान आर्थिक गैर बराबरी का मूल मनुविधान ही है।

इस प्रकार वर्ण व्यवस्था और इसका श्रेणी बद्ध असमान विभाजन भारत को बड़ा ही अहित किया. सर्व शक्तिमान और साधन सम्पन्नता के बाबजूद भारत हजारों साल तक गुलाम रहा क्योंकि हिंदुओं में कभी अपनत्व, सौहार्द और संगठन भावना नहीं रही।आर्थिक गैर बराबरी के इतिहास की शुरुआत वर्ण व्यवस्था के सिद्धांत से होती है.वर्ण व्यवस्था वास्तव मेंब्रम्हाणी अर्थव्यवस्था है जिसमें सभी श्रेष्ठ चीजों के उपभोग का विशेषाधिकार ब्राम्हणों को ही प्राप्त है. बहुजन हमेशा ही विपन्न, वित्त-रहित और दीन हीन दशा में रहने को विवश हुये जिसका असर आज भी देखा जा सकता हैं।

इस प्रकार ब्रम्हाणवाद ने अंतर्विवाह और सहभोज पर रोक लगाने का काम पशु की तरह न्रुशंग होकर किया. शूद्रों और स्त्रियों के बारे में नियमों का कठोर होना यह प्रमाणित करता है कि बौद्ध शासन काल में इन वर्गों के अभूतपूर्व अभ्युदय ने ब्राम्हणों को रुष्ट ही नहीं किया बल्कि उनकी स्थिति उन्हें असहनीय हो गयी थी.यह ऊपर से नीचे तक उनकी पवित्र समाजिक व्यवस्था के पूरी तरह उलट

[1] त्रिशरण, कुमार, विजय, डॉ.,(2011) आरक्षण बनाम डाइवसिर्टी, खण्ड-2 पृष्ट-18

था.जिसका स्थान प्रथम था वह अंतिम हो गया और जो अंतिम स्थान पर था, वह प्रथम स्थान पर हो गया था. मनु के नियम से यह भी स्पष्ट होता है कि ब्राम्हणवाद ने किस प्रकार जान बूझकर शूद्रों और स्त्रियों को पदावनत कर उनकी स्थिति पर लाने के लिए उनकी राजनैतिक शक्ति का उपयोग किया. विज्योन्मत ब्राम्हणों ने पुराने आदर्श के अनुसार अर्थात इनको दासवत बनाये रखकर शूद्रों और स्त्रियों के विरुद्ध जोरदार अभियान शुरू किया और वे इनको पराधीन बनाने में सफल भी हुये. शूद्र तीनों उच्च वर्ग के दास और स्त्रियाँ अपने अपने पतियों की गुलाम बना दी गयी. बौद्ध धर्म पर विजय पाने के बाद ब्राम्हणवाद ने जो काले कारनामे किये उनमें सबसे ज्यादा काला कारनामा यही था. इतिहास में इसकी जोड़ की कोई मिशाल नहीं मिलती।यहाँ बाल पूर्वक अधिकार ज़माने वाली किसी सत्ता ने अपने वर्ग के आधिपत्त को बनाये रखने के लिए किसी को इस प्रकार पदावनत करने के इतने घृणित कार्य किये हों. ब्राह्मणवाद ने पद दलित करने का जो कार्य किया. उसे दुर्भाग्य वश उसमें पूरी सफलता नहीं मिली. यह स्त्री और शूद्र जैसे शब्दों तक रह गयी. जो लोग अपने पातक कर्म की थोड़ी बहुत झलक पाना चाहते हैं, वह इन दोनों शब्दों के पीछे खाडी भीड़ को देखें. ये शब्द जनसंख्या के कितने बड़े भाग को अपने में समेट लेते हैं? स्त्रियाँ सारी जनसंख्या का आधा भाग हैं. जो कुछ बचा उसमें दो तिहाई तक शूद्र है ये दोनों मिलकर सारी जनसंख्या का 75%तक होते हैं।यह वह विशाल जनसमूह है जिसे ब्राह्मणवाद ने सदा के लिए गुलाम बना दिया, सर्वदा के लिए पददलित कर दिया. इतने बड़े पैमाने पर पदावनत कर 75% लोगों से उनके जीने का, उनकी आजादी का और उनके सुख-चैन से रहने का अधिकार छीन लिया गया. जिसके कारण अगर भारत एक मृत राष्ट नहीं तो ह्रासशील राष्ट बनकर रह गया है।

भारतीय नारी को ब्राह्मणवाद ने किस दर्जे तक नीचे गिरा दिया था. इसके बड़े शर्मनाक उदाहरण डॉ. अम्बेडकर ने प्रस्तुत किये हैं. उनमें से कुछेक इस प्रकार है।मनु ने ब्राह्मणों को भू-देवता अर्थात

पृथ्वी के देवता की संज्ञा दी. ब्राह्मणों ने इस कथन को व्यापक बनाया और वे अन्य वर्गों की स्त्रियों के साथ सम्भोग करना अपना अधिकार समझने लगे. रानियाँ-महारानियाँ भी इस अधिकार से न बच सकी. लुदोविको डीवर्थेमा ने, जो भारत में सन 1502 के आसपास यात्री के रूप में आया था, कालीकट के ब्राह्मणों के विषय में निम्न वृतांत लिखा है। यह जानना उचित है कि यह ब्राह्मण कौन हैं. इनका यहाँ के धर्म में वही स्थान है जो हमारे यहाँ पादरियों का है. जब राजा विवाह करता है, तब तक इन ब्राह्मणों में सबसे अधिक योग्य और सबसे अधिक पूजित को चुनता है और उससे अपनी पत्नी के साथ पहली रात सोने का आग्रह करता है ताकि वह उसके कौमार्य को भंग कर सके जब सैमोरिन विवाह करे तब उसे तब तक अपनी पत्नी के साथ सम्भोग नहीं करना चाहिए जब तक नम्बूदरी या प्रधान पुरोहित उसके साथ सम्भोग न कर ले और यह पुरोहित यदि चाहे तो उसके साथ तीन रात तक सहवास कर सकता है, क्योंकि उसी स्त्री की पहली संतान उस देवता का नैवेद्य होने चाहिए, जिसकी वह आराधना करती है।

बम्बई प्रेसिडेंसी में वैष्णव संप्रदाय के पुरोहित नव यह दावा किया कि उन्हें अपने संप्रदाय की स्त्रियों के साथ उनकी विवाह की पहली रात सम्भोग करने का अधिकार है. यह मामला सन 1869 में बम्बई उच्च न्यायालय में किन्हीं करसोनदास मुलजी के विरुद्ध इस संप्रदाय के प्रधान पुरोहित द्वारा दायर किये गए महाराजा मानहानि मुकदमें की सुनबाई के वक्त उठा था. इससे पता चलता है कि उस समय तक पहली रात का लाभ उठाने का अधिकार अमल में था।

अगर पहली रात का सम्भोग करने का अधिकार निचले वर्ग पर लागू किया जा सकता है तब वह ब्राह्मण इसका विस्तार करने से नहीं चुके. उन्होंने खास तौर से यह मलाबार में किया. मनु ने ब्राह्मण को भू-देव, पृथ्वी के स्वामी की संज्ञा दी थी. ब्राह्मणों ने इस कथन को व्यापक बनाया और अन्य वर्गों की स्त्रियों के साथ स्वच्छद होकर सम्भोग करने का अधिकार जताने लगे, यह ख़ास तौर से मलाबार में

हुआ।औरत को इस प्रकार अपमानित और जलील करने वाला ब्राह्मणवाद, यदि बौद्ध आन्दोलन पर स्त्री को पतित करने का दोष लगता है तो उसे झूठा और कपटपूर्ण ही माना जाना चाहिए।

डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को फ्रांस की क्रांति से भी बड़ी क्रांति कहा है. यह ऐसी क्रांति थी जिसने भारतीय नारी को ज्ञान, सम्मान और समता प्रदान किया और डॉ.अम्बेडकर का काल दलित महिलओं की स्वतंत्रता,समानता को लेकर की गई सक्रीय और संघर्षपूर्ण भागीदारी का स्वर्ण काल हैं। डॉ.अम्बेडकर के समय में चले दलित भागीदारी का स्वर्ण काल है।डॉ.अम्बेडकर के समय में दलित आन्दोलन में लाखों शिक्षित-अशिक्षित, घरेलू, गरीब मजदूर,किसान,दलित,शोषित महिलायें जुड़ीं।उन्होंने जिस निर्भीकता बेबाकी और उत्साह से दलित आन्दोलन में भागीदारी निभाई वह अभूतपूर्व थी।दलित महिला आन्दोलन और डॉ. अम्बेडकर के साथ महिला की सुसंगत शुरुआत 1920 से मान सकते हैं।हालांकि सुगबुगाहट सन 1913 से ही हो गई थी।1920 में भारतीय बहिष्कृत परिषद की सभा कोल्हापुर नरेश शाहू महराज की अध्यक्षता में संपन्न हुई।इस सभा में पहली बार दलित स्त्रियों की शिक्षा के महत्व को समझते हुए इस सभा में सौ.तुलसाबाई बनसोडे और रुक्मिणीबाई ने घरेलू भाषा में लडकियों की शिक्षा पर बात राखी।उंहोने अपने बिचार रखते हुए कहा की लडकियों की असली शक्ति शिक्षा ही है।इस परिषद में लडकियों के लिए अनिवार्य और मुक्त शिक्षा का प्रस्ताव पारित किया गया।देशभर में चल रहे दलित के साथ दलित महिला आन्दोलन भी अपना आकर ले रहा था।1920 से आरम्भ हुए दलित आन्दोलन में दलित महिला आन्दोलन में दलित महिलओं की सक्रीय भागीदारी बढ़ती जा रही थी।20 जुलाई 1924 में मुम्बई में बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की गई।इस सभा की स्थापना का मुख्य उद्देश्य अस्पृश्यता के खिलाफ जंग छेड़ने के आलावा दलित बस्तिओं में स्कूल और छात्रावास खोलने सम्बन्धी प्रयास कर दलित समाज में जागृति और चेतना पैदा करना था। बहिष्कृत हितकारिणी सभा की अधिसंख्य सभाए जो जगह-जगह गांव, देहातों में आयोजित की जाति थी उनमें दलित महिलाए लगातार

उपस्थित रहती थी।इस समय दलित महिलाए अपने समाज और परिवार जनित पीड़ा को सार्वजनिक रूप से अभिव्यक्त कर रही थी।पर उनकी अभिव्यक्ति अधिकार नागों व स्वागत गान के रूप में ही होती थी।बहिष्कृत हितकारिणी सभा की मीटिंगों में वेणुबाई भटकर और रंगुबाई शंभरकर अपने मधुर कंठ से दलित पीड़ा की मार्मिक और संघर्षपूर्ण अभिव्यक्ति को गीतों में ढालकर मनमोहक स्वर में गाकर सबका मन मोह लेती थी ।1924 में ही एक अत्यंत क्रन्तिकारी घटना घटी, जिसने दलित आन्दोलन की सक्रियता एवं उसके बिचारात्मक पक्ष को उभरने का भरपूर मौका दिया।वह क्रन्तिलित महिला दलित बच्चियों के लिए विद्यालय स्थापित करना।

उच्च शिक्षित दलित महिला जाईबाई चौधरी जो बाद में सशक्त दलित महिला नेता के रूप में स्थापित हुई, उन्होंने 1924 में नागपुर में चोखा मेला कन्या पाठशाला आरम्भ की।जाईबाई चौधरी स्वंम बहुत ही मुसीबतों से पढ़-लिख पाई थी।जाईबाई चौधरी घर और समाज का तीव्र बिरोध सहकर शिक्षिका बनी थी ।शिक्षिका के साथ-साथ एक जागरूक लेखिका एवं अच्छी वक्ता भी थी।जाईबाई चौधरी बाबासाहेब के बिचारों से प्रभावित उनकी पक्की अनुयायी थी।जाईबाई ने स्त्री-शिक्षा को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते हुए सर्वप्रथम नारी को शिक्षित कन्ने पर बल दिया।उनके अथक प्रयासों से दलित महिला आन्दोलन की माला में संघर्ष का एक मोटी और जुड़ गया।23-24 फरवरी 1924 में 'मध्यप्रांतवराड महार परिषद' आयोजित की गई।इस सभा में ब्राहम्ण वक्ता ने कहा की म्हारों को कटा हुआ मांस नहीं खाना चाहिए।परंतु उनका मृत मांस खाने में कोई हर्ज नहीं है।'ब्राह्मण वक्ता की इस बात पर वेणुबाई भटकर और रंगुबाई शंभरकर ने खूब धुलाई की'।महिलओं की इस सभा में दलितों ने यह प्रण लिया कि अब अश्पृश्य लोग हिन्दुओं पर निर्भर नहीं रहेंगे और अपनी मुक्ति के रस्ते खुद खोजेंगे।इस सभा के आखिर में दो प्रस्ताव पारित किए गए।पहला यह कि अस्पृश्यता के लिलाफ सरकारी कार्यवाही होनी चाहिए।दूसरा, सरकार का ध्यान शिक्षा की और खीचना चाहिए।

1920 से लेकर 1924 तक दलित महिला आन्दोलन अपनी मंद गति से चलता हुआ स्त्री शिक्षा और अस्पृश्यता के मुद्दे पर समाज का ध्यान खीचता रहा।1927 के अंत में द्वरा चले गए महार सत्याग्रह की परिणति 'मनुस्मृति दहन' और 'चवदार तालाब' का पानी पिने से हुई। पहली घटना पानी, जिसके लिए दलित स्त्रियाँ रोज-रोज बेइज्जती सहती थी।दूसरी मनुस्मृति, जिसके कारण स्त्री का जीवन नरक हो गया था। पानी का दलित महिलाओं के मानसिक, वैचारिक, बौद्धिक और सामाजिक जीवन की कायापलट ही कर दी मनुस्मृति दहन के कारण एक तो बाबासाहेब स्त्रियों के सबसे बड़े हितैषी कहलाए दूसरी दलित महिला आन्दोलन के वैचारिक महानायक की पदवी पर हमेशा-हमेशा के लिए आसीन हो गए।की बढती भगीदारी से डॉ.अम्बेडकर द्वारा चलाए जा रहे दलित आन्दोलन को ताकत मिली और उसमे तेजी आ गयी।दलित महिलाओं को सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक रूप से संगठित करने लगी।25 दिसम्बर 1927 को चवदार तालाब के महाड़ सत्याग्रह के ऐतिहासिक सम्मेलन में ढाई हजार दलित औरतों ने 'मनुस्मृति दहन'में शामिल होकर हिन्दू धर्म के स्त्री विरोधी कानून को मानने से इंकार कर दिया ।इसी सभा में दलित महिलों की भरी संख्या में उपस्थिति देखकर डॉ. अम्बेडकर ने उनके पक्ष में अपना एतिहासिक भाषण दिया बाबासाहेब ने कहा 'स्त्रियों को गृहलक्ष्मी ही क्यों होना चाहिए ।?

मन में उंची महत्वाकांक्षा रखो।ज्ञान और विद्या पर केवल पुरुषों का ही अधिकार नहीं है वह स्त्रियों के लिए भी बहुत ही महती जरूरत है और जो स्त्रियों द्वारा समाज में योगदान है उस भूमिका को पुरुषवादी समाज को बताना होगा।समाज में अश्पृश्यता बनाने का एक समझ को कठोर रूप से समाज में पुरानी नीतियों को अभिसाफ़ मान कर जो दलित स्त्रियों ने पालन कर रही है उन्हें ब्राहम्मणवादी व्यवस्था को छोड़ना होगा इस प्रकार से दलितों के मसीहा समाज के बहुजन नायक कांशीराम कहा करते थे जो अपनी पुस्तक चमचा युग में जिक्र किया है भारत की स्थिति को मनुवादी व्यवस्था के कारण ही दलित समाज का आज तक पतन ही हुआ है,

और "बाबासाहेब डॉ.भीम राव अम्बेडकर आज भारत में ही नहि पूरी दूनिया में ज्ञान का प्रतीक कहा जाता है भारत में दलित स्त्रियों या सम्पूर्ण भारत को अपने शिक्षा से मानव की समस्या का निवारण का सिद्धांत वेत्ता ,विधि ज्ञाता ,भारत का संविधान निर्माता जिन्होंने संविधान को लिखने के बाद कहा था की किसी भी राष्ट्र का विकास का आकलन का पैमाना हम उस राष्ट्र की महिलओं की शिक्षा के द्वारा मापा जा सकता है ,और भारत में सभी महिलओं के लिए 11 अप्रेल 1947 को हिन्दू कोड बिल कानून बनाया था यह सर्वविदित है की ब्राह्मण और सवर्ण बिल नहीं पास होने दिया जो कानून मंत्री से पद त्याग दिया था जो आज तक महिलओं को आर्थिक सुरक्षा की बात नहीं किया गया है, उनका कहना था की संवैधानिक अधिकार के साथ ही आर्थिक अधिकार भी होना चाहिए ,अगर स्त्रियों को आर्थिक अधिकार से बचती है तो घूरे पर महल बनाना होगा ,और बाबासाहेब का जीवन का उद्देश्य उन्होंने तीन नारा लगाया जिससे दलित स्त्रियों और सर्व समाज को कहा - शिक्षित हो ,संगठित हो ,संघर्ष करों, दलित स्त्रियों को बाबासाहेब का यह नारा उनको उच्च शिक्षा लेने के प्रेरित करता है, डॉ.बाबा साहेब भीम राव चाहते थे की भारत एक महान देश बने जो उनके कार्यो द्वारा समझा जा सकता है, दलित समाज और भारत का नव निर्माता हैं। जो भारत के दलित पूरे विश्व के लिए मानवता का उद्धारक के रूप में कुछ कार्य किया जो कभी भुलाया नहीं जा सकता आज दलित स्त्रियों का साहित्य और संस्कृति की विकाश का नीव है दलित स्त्रियों का भी रहा है जैसा की "झलकारी बाई ,लाजो ,महाबीरी देवी ,पन्ना ,जगरानी पासी ,नन्ही बाई ,अवंती बाई ,रानी गुडियालो ,विणा दास ,उदादेवी